

Neha Singh
31/01/2025, 3:45:37

“जिसके पास जीने का कोई कारण होता है, वह लगभग किसी भी परिस्थिति को सहन कर सकता है।”

1970 के दशक की चर्चित फिल्म ‘आनन्द’ का एक हंश्य जिसमें कैंसर पीड़ित आनन्द के बहु जानने के बाद की कि उसकी साँसे कुद्र उम्ही की ओटलाज है का जिंदादिली भरा जवाब,

“बाबू मोशाम जिन्दगी बड़ी होनी चाहिये, सभी नहीं” जिसमें आनन्द के पास जीने का कारण अपने जीवन की जिंदादिली के साथ जीना और किसी भी परिस्थिति को सहन करने की उम्हता विकसित कर “मरने से पहले मरना नहीं चाहता” की साकारात्मक सोच न केवल आनन्द वल्कि उसके आस-पास के लोगों के जीवन को ‘जीवन्त’ बना देता है।

उपर्युक्त फिल्म के उदाहरण निष्ठा के विषय ‘जिसके पास जीने का कोई कारण होता है वह लगभग किसी भी परिस्थिति को सहन कर सकता है’, की जीवन्तता की चरित्र के जीवन के प्रति आशावादी बने रहने व सबसे उठिन परिस्थिति में भी साहस बनाये रखने की दर्शाता है।

परन्तु कहीं के साथ ‘जीने के कारण’ की समझना होगा कि ऐसे कोई से कारण है

जो अनुष्य या जीव में जीने की प्रेरणा
प्रदान करते हैं। साथ ही प्रेरणा का वह
सहर जो सहन करने की द्वागता विकसित
करता है।

वैभवितल स्तर पर आदि देखें तो जीने
का कारण स्वयं की सर्वश्रेष्ठ बनाना, इससे
के जीवन को बेहतर बनाना ही सकला
है। काँट के शब्दों में कहे तो साह्य
स्वयं प इससे के जीवन को बेहतर बनाना
ही सकला है जिसके साधन के साथ के
अधिप्रेरणा, आशावादित, निष्काम कर्म, जीवन
के प्रति सक्रान्ति सोच 'आदि नार्म जरते
हैं।

उदाहरण स्वरूप 'श्रीतल देवी' जिन्होने
अपने दोनों हाथों की बोने के बाद भी
अपने आशावादित को बनाये रखने के साथ
अपने 'जीने का कारण - तीरदाँड़ बनाना.' को
बनाये रखते हुए अग्रमग सभी विषम
परिस्थिति के सहन कर ओसम्बिक में
स्वर्ण पदक विजेता के साथ में प्रचल
भृत्या।

इसी के साथ दूसरा उदाहरण एरीफन लॉकिन्स
का है जिन्होंने अपनी दिल्पांगता को पीढ़े
कोड अपने जीने का कारण 'ब्रह्मण्ड के गुह्य
रहस्यों की खोज की बना किसी भी परिस्थिति
के सहन कर विद्यान के स्रोत में अग्रिम
द्वाप दोड़ी ।

मेरे उदाहरण यह दियाता है कि कैसे
'कारण' (जीने का) की अजबूती अनुभ्यव में
विषय परि-परिस्थिति में जीने की प्रेरणा
पिक्सिल उत्तरता है परन्तु क्या इसमें यह
इसमें तक ही सीमित है अर्ह या इसका
विस्तार 'दूसरी के लिये जीना' भी जीने
का एक कारण हो सकता है ?

इस सम्बन्ध में भहार जाति में जन्मे
भीमराव अम्बेडकर के जीवन का वर्णन करना
काफी दीचल है जिसमें भहार जाति वालों को
उस ललाच से पानी पीने के लिये प्रतिबंधित
किया गया था जहा जानकरों को भी पानी
पीने की अनुमति थी यही से अम्बेडकर ने
जीवे का कारण 'अस्पृश्यता को दूर करना' कह
था जिसने उन्हें किसी भी परिस्थिति में
जीने की प्रेरणा प्रदान की ।

इसी के साथ आपनी का नरस्तीग छोड़माव
के दूर करने की 'जीने का कारण' बनाकर
नेसन अंडेला ने प्रताङ्गन की दूर परिस्थिति
को सहन कर 'समानता के गुण' को
विकसित करने का प्रयास किया ।

वही गुलामी की जंजीरों में बँधे भारत
के अवतन्त्रता दिलाने की 'जीने का कारण'
बना कर अहान्मा जाँदी कई बार जेल
जाने के बाबजूद 'दूर परिस्थिति के सहन'
कर अवतन्त्रता के गुण विकसित किया ।

इसी के साथ न केवल अवतन्त्रता दिलायी
वल्कि अंहिसा, सत्य, प्रेम और से आनन्दीय
गुण विकसित करने का संदेश दिया ।

इसी के साथ 'वच्चों के वचपन की
शुरुआत करने' की अपने जीने का कारण
बना 'क्लेश सम्याची', ने 'वचपन वचाजी
आन्दोलन' के आहमत के न केवल वच्चों
के जीवन की एक श्री वल्कि अविष्य
की दृंगी की शुरुआत किया ।

इसरी की सेवा की 'जीने का कारण बनाने का कारण आनंद में समानुग्रहिति, करणा, परोपकारिता जैसे अतिक मूल्यों के सद्गुणों की प्रधानता है जो इसरी के सुख से सुख ढुँढने की 'जीने का कारण बना' किसी भी परिस्थिति के सहन कर निष्पाम कर्म हेतु प्रेरित रहते हैं।

परन्तु क्या सभी के पास जीने का कारण जीवूक होता है? यदि व्यक्ति निराशा, दृष्टि, चिंता जैसी अकारात्मक आवे धीं विरा हो ले क्या वह सभी परिस्थिति की सहन करने की असत्ता विकसित कर सकता है?

इसका दृष्टिया उदाहरण चकाचींड व प्रसिद्धि के बाबजूद वासीकुड अधिनेता भुशांत सिंह राजपूत की आनंदहत्या कर अपनी जीवनसीला की समाप्त कर लेना है। जिनमे निराशा व अकेलेपन ने व छेष उ 'जीने का कारण' समाप्त कर दिया वरन् परिस्थिति की सहन करने की असत्ता भी समाप्त

कर दी। NCRB की रिपोर्ट की आने के
हर बारे में भारत में 14 लोग आतंकवादी
जुर्माने हैं।

इस प्रकार अकारात्मक भावनाएँ जहा
प्रयोगित अंदर जीवन के प्रति उदासीनता का
संचार कर 'जीवन की वृत्ति से बदलते'
बना देती है वही अकारात्मक भावनाएँ
'जीवन के उद्देश्यपूर्ण बनाने के साथ'
उस शूर्प के आंतरि बनाती है जो एवंम
के साथ-साथ इसकी के अंधेरों की दूर
जीवन के प्रकाशनम् बनाता है। इसी के
साथ निम्न पंचितमा प्रांसुगिक्त लगती है-

"कौन कहता है आसमान के सुराष्ट्र
वही बनता,

एक पत्तर के तबीयत से उदासी
मारी।"

45/100